प्रसार बुलेटिन 2015/05

kvklodipurarwal@gmail.com
arwalkvk@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोदीपुर, अरवल
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

मसूर की वैज्ञानिक खेती

डॉ0 राकेश कुमार,
वरीय वैज्ञानिक-सह-प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र,
लोदीपुर फार्म, अरवल

डॉ॰ निशांत प्रकाश
वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र,
लोदीपुर फार्म, अरवल

डॉ0 कविता डालमिया,
वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र,
लोदीपुर फार्म, अरवल

मसूर की वैज्ञानिक खेती

यह बिहार की बहुप्रचलित एवं लोकप्रिय दलहनी फसल है तथा इसका कुल क्षेत्रफल 1.71 लाख हेक्टेयर तथा औसत उत्पादकता 880 किग्रा. प्रति हेक्टेयर है। भूमि की उर्वराशक्ति बनाये रखने में यह सहायक होती है। असिंचित क्षेत्रों के लिए अन्य रबी दलहनी फसलों की उपेक्षा मसूर अधिक उपयुक्त है।

खेत की तैयारी : दोमट मिट्टी मसूर के लिए सर्वोत्तम पायी जाती है। मिट्टी भुरभुरी होना आवश्यक है। इसलिए 2–3 बार देशी हल अथवा कल्टीवेटर से जुताई कर ऐसी अवस्था प्राप्त की जा सकती है।

उन्नत प्रभेद :

छोटे दाने वाली प्रजातियाँ – पी॰एल॰ 406, पी॰एल॰ 639

बड़े दाने वाली प्रजातियाँ – अरूण, मलिका (मलिका)

पोषक तत्व प्रबंधन

राइजोबियम कल्चर का प्रयोग : बीज में राइजोबियम कल्चर का प्रयोग करने से दलहनी फसलों की जड़ों में नेत्रजन स्थिरीकरण बढ़ जाता है जिससे भूमि की उर्वरता बढ़ जाती है तथा उपज में भी बढ़ोत्तरी होती है। राइजोबियम कल्चर का (5 पैकेट प्रत्येक 200 ग्राम) प्रति हेक्टेयर के लिये आवश्यकता होती है। कल्चर का व्यवहार उसकी समाप्ति तिथि देखकर ही करें। 100 ग्राम गुड़ को 1 लीटर पानी में घोलकर हल्का गरम करें ताकि घोल लसलसा हो जाये। तदोपरान्त ठंडा होने पर उस घोल में पाँच पैकेट राइजोबियम कल्चर डाल कर अच्छी तरह से मिला दें। जीवाणुयुक्त घोल में 40 किलो बीज को अच्छी तरह से मिला दें ताकि एक परत बन जाये, इसके बाद छाये में सुखाकर शीघ्र बुवाई कर दें।

फास्फोजिप्सम का प्रयोग : सघन खेती एवं गन्धक रहित उर्वरकों के अधिक उपयोग से मिट्टी में गन्धक की कमी हो रही है। फास्फोजिप्सम में 17 प्रतिशत गन्धक होता है जिसे मसूर की बुवाई पूर्व 200 किलो प्रति हेक्टेयर व्यवहार करने से 30–35 किलो गंधक की आवश्यकता पूरी हो जाती है।

सूक्ष्म पोषक तत्व का प्रयोग : बिहार में मुख्यतः जिंक और बोरान की कमी पायी जा रही है जिससे दलहन की उपज प्रभावित होती है। सूक्ष्म तत्वों का उपयोग मिट्टी रिर्पोट जाँच के आधार पर किया जाना चाहिये। जिंक एवं बोरोन के व्यवहार उर्वरक के रूप में बुवाई के पूर्व अनुशंसित मात्रा में 30–40 किलो कम्पोस्ट के साथ खेत में करना चाहिये। सूक्ष्म पोषक तत्वों के एक बार प्रयोग करने से 5 फसल लगातार लिया जा सकता है।

फास्फोरस घोलक बैक्टीरिया पी.एस.बी. का प्रयोग : यह फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ाने के लिये जीवाणु उर्वरक है बहुधा असिंचित भूमि में स्फुर की उपलब्धता घट जाती है। पी.एस.बी. प्रयोग करने से फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ जाती है। 4 किलो पी.एस.बी. को 50 किलोग्राम कम्पोस्ट में मिलाकर खेतों में बुवाई पूर्व व्यवहार करना चाहिये।

उर्वरकों का व्यवहार : उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण रिर्पोट के आधार पर करना उचित होता है। सामान्य उर्वरता वाले खेतों में बुवाई के समय 20 कि.ग्रा. नेत्रजन एवं 40 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर प्रयोग करने से उत्पादन में वृद्धि लायी जा सकती है। इसके लिए 100 किलो डीएपी या 46 किलो यूरिया तथा 250 किलो सिंगलसुपर फास्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय में इस्तेमाल करें।

बीज दर एवं बोने की विधि : एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में बुवाई के लिए 40 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बड़े दाने वाली किस्म में 5 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की दर से बढ़ा दें।

पंक्ति में बुवाई : पंक्ति में बुवाई के लिए दूरी 25 से.मी. ×10से.मी. रखें। कतार में बुवाई करने से खरपतवार नियंत्रण में आसानी होती है तथा बीज की मात्रा कम लगती है एवं समरूप से पौधों का जमाव भी होता है।

बीजोपचार : कीट–व्याधि से फसल को मुक्त रखने के लिये ट्राइकोडर्मा विरीडी 5 ग्राम प्रति किलो बीज या कार्बेन्डाजिम 1.5–2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम तथा 6 मि. ली. क्लोरपायरीफॉस प्रति किग्रा0 बीज की दर से उपचारित करना श्रेयस्कर होगा। बीजोपचार में सबसे पहले फफूँदनाशी तत्पश्चात कीटनाशी एवं सबसे बाद में राइजोबियम कल्चर से उचारित करने का क्रम अनिवार्य है।

सिंचाई : जाड़े में यदि वर्षा हो जाये तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। कम नमी वाले खेतों में एक सिंचाई लाभप्रद पायी गयी है। कम नमी वाले खेतों में एक सिंचाई बुवाई से 45 दिनों के बाद करें। सिंचाई हल्की होनी चाहिये, क्योंकि पानी का जमाव होने पर फसल प्रभावित होती है। टाल क्षेत्रों में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। सूक्ष्म सिंचाई के लिये स्प्रिंकलर का प्रयोग करें जिससे सिंचाई जल दक्षता में वृद्धि होती है।

खरपतवार नियंत्रण : परजीवी खरपतवार खासकर अमरबेल (कस्कुटा / डॉडर) का प्रकोप इधर कुछ वर्षों से टाल क्षेत्रों में भयंकर रूप से देखा जा रहा है। इसके अलावा मसूर में मोथा, दूब, कृष्णनील, आक्टा, बथुआ, मिसिया, मटरा मटरी, वनप्याजी, खागड़ा, बनगाजर आदि खरपतवार पाये जाते है। इनके नियंत्रण के लिये 2 लीटर फ्लूक्लोरिलीन को 600–700 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम जुताई के बाद खेत तैयार में छीट कर भूमि में मिला दें या पेन्डीमिथिलीन 30 प्रतिशत EC 2.0 से 2.5 लीटर बोने के 2 दिन के अन्दर 600–700 लीटर पानी में खेत तैयारी के बाद बोने के पूर्व नैपसेक यन्त्र से छिड़काव कर मिट्टी की सतह में मिला दें। उपचार के 30–35 दिन के अन्दर कोई शस्य क्रिया नहीं करें।

फसल सुरक्षा

कीट व्याधि नियंत्रण :

(क) रोग व्याधि नियंत्रण : बिहार में मसूर के प्रमुख रोग व्याधि में उकठा, एन्थेक्नोज, स्कोकाइटा ब्लाइट तथा ग्रेमोल्ड है। इसके बचाव के लिए खड़ी फसल में मेंकोजेब 75 प्रतिशत WP 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा ट्राइकोडरमा 5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. की दर से बीज उपचार करें।

(ख) कीट नियंत्रण : मसूर के प्रमुख कीड़ों में कजरा पिल्लू, कटवर्म, सूड़ी तथा एफिड प्रमुख है। कीट को आर्थिक क्षतिस्तर से नीचे रखने के लिये बुवाई से 20–25 दिन बाद एजैडिरैक्टीन (नीम तेल) अथवा क्लोरपाइरीफॉस 0.03 प्रतिशत 3 मि.ली. प्रति ली. पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

कटाई गहाई एवं उपज : फसल तैयार हो जाने पर सुबह में कटनी करें। कटाई के बाद फसल को खलिहान में 4–5 दिन सुखाकर दौनी कर लें। भण्डारण से पूर्व दानों को अच्छी तरह सुखा लें अन्यथा कीड़े लगने की अधिक संभावना रहती है। उन्नत विधि से खेती करने पर 18–20 क्विंटल उपज प्राप्त हो सकती है।

अधिक जानकारी के लिए
कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल से सम्पर्क करें !

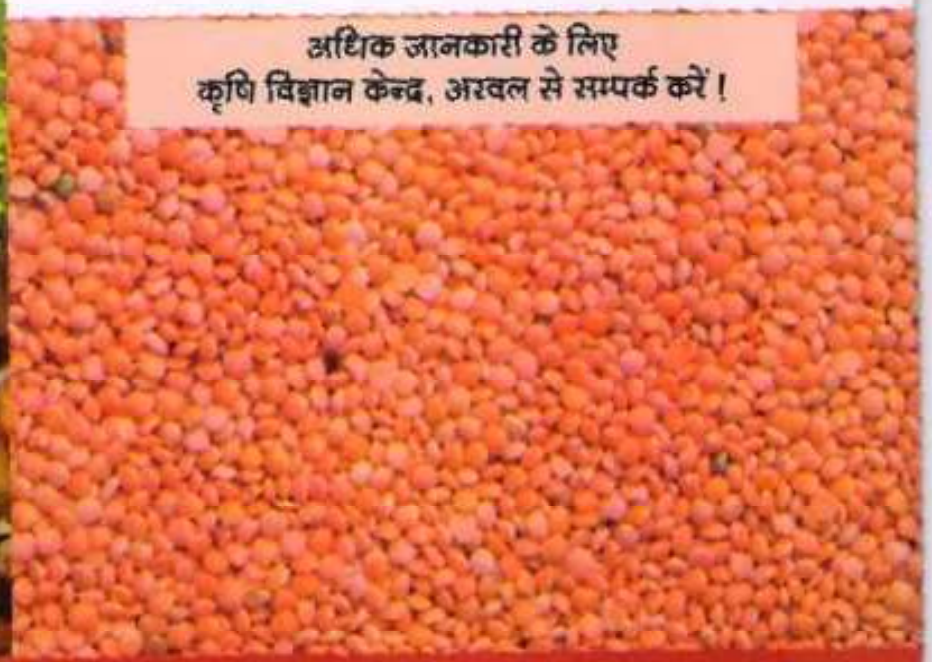

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोदीपुर, अरवल
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

Printed by : Dikshu Art & Print's, Patna-14, # 9431498534, e-mail : dikshuart2010@gmail.com